© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Education

लोकलोरे जनजातीय कला संरक्षण- एक कला कार्यशाला

डॉ. संदीप कुमार मेघवाल
(स्वतंत्र कलाकार)
पता- मु. पो.- गातोड़(जयसमंद),
तहसील- सराड़ा,
जिला- उदयपुर, राजस्थान-
313905

आदिवासी जीवन की सुंदरता प्रकृति की गोद में फलती-फूलती रही है। इसलिए जो मनोहारिणी छटा हम देखते है, यह अनुपम अलंकृत परिष्कृत है। यह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है, प्रकृति सौरभ से सुरभित आदिवासी सुषमा इतनी आकर्षक, उदीप्त और सशक्त है कि अनायास ही लोगों कि सत्य गरिमा इसकी ओर उन्मुख हो जाती है। जनजातीय कला को आज के आधुनिक दौर में संरक्षण एवं पुनरुधान की परम आवश्यकता है।

चित्र संख्या-1

अगर हम समय रहते सचेत नहीं हुए तो एक दिन इसके दीदार के लिए तरस जाएंगे। हमें अपने अतीत मे झाँकने की अवश्यकता है, जहां सौन्दर्य के मूल प्रतिमान देखने को मिलते है। हम सबकुछ जानते हुए भी पता नहीं क्यूं अनजान बने हुए है। कई विद्वानो ने कहा है की समस्त कलाओं की जननी आदिवासी कला है। इसके बावजूद भी हम इन मूलभूत कलात्मक तत्व को संरक्षित नहीं कर रहे हैं। आज जनजाति कलाकारों की हालात खराब है। किसी का ध्यान इस और नहीं जा रहा है। में दक्षिण राजस्थान के जनजातीय कलाकार की बात करू तो कला एवं कलाकार दोनों के संरक्षण की आवश्यकता है। यह सर्वविदित है कि इस में क्षेत्र प्राचीन काल ही आदिवासीयों का जमाव रहा है। यहाँ कि आहड़ सभ्यता, गिलुंड सभ्यता, आबु पर्वत स्थलों से प्राप्त स्रोत जनजाति कला के साक्षी है।

इस प्राचीन क्षेत्र में जनजाति कला परम्परा का निर्वहन आज भी सुचारु रूप से हो रहा है। विविध सांस्कृतिक उत्सवो पर यह अपनी कला का प्रदर्शन करते है। लेकिन आज के भौतिकवादी विलासिता के युग ने इनके परम्परा को ठेस पहुंचा है। इसके परिणाम में इनके कलात्मक दृष्टिकोण मे परिवर्तन आया है। जिसके परिणाम मे मूल जनजाति को को क्षति हुई है। इसको बचाने कि परम आवश्यकता है।

चित्र संख्या-2

सर्वप्रथम तो इस क्षेत्र मे परंपरागत जनजाति कलाकारों कि खोज करने कि आवश्यकता है। क्यूंकी यह अरावली पर्वतीय प्रदेश समान्यत आमजन से दूर रहा है जिससे यहाँ के जनजाति कलाकारों का बाजार से साक्षात्कार नहीं हो पाया। इस कार्य के लिए आदिवासी कला अध्येता जैसे लोगों की आवश्यकता है। यह कदम उसी प्रकार हो जैसे जे. स्वामीनाथन बनकर नगड सिंह श्याम जैसे कलाकारों को विश्व स्तर पर आदिवासी कलाकार का साक्षात्कार कराया। सरकार को सर्वे करवाकर जनजाति कलाकारों की परिचय पत्रिका एवं दस्तावेजीकर करना चाहिए। कलाकारों की खोज के साथ कई कलाएं प्रचलन से बाहर होती जा रही है, इसके संरक्षण की भी बहुत आवश्यकता है इनका दस्तावेजीकरण कर संरक्षण ओर पुनरुद्धान करना चाहिए।

चित्र संख्या-3

दक्षिण राजस्थान में भील, मीना, गरासिया जनजाति की ओर ध्यान आकर्षित करे तो कई कलात्मक तत्व प्रचलन से बाहर होते जा रहे है। जैसे नेज़ा कला, लेजम वाला रुमाल, तारपी वाद्य यंत्र, कोठी अलंकरण इत्यादि प्रचलन से बाहर आ गए है। अकादमिक कार्यशालाओं एवं काला शिविरों में जनजाति कलाकारों के साथ सोतेला व्यवहार किया जाता है। इनके लिए मानदेय का अलग प्रावधान है जो आधुनिक कलाकारों की तुलना मे बहुत कम होता है। इसमे भी समानता लाने की आवश्यकता है। कुछ जानजातीय कलाकार अशिक्षित होते है जिसके परिणाम से इस कलाबाजार माफिए उनके साथ अशिक्षा का लाभ उठाकर सस्ते दामो मे काम करवाते है। इसलिए जनजाति कलाकारों के लिए कलाबाजार के प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए।

चित्र संख्या-4

राजस्थान की मोलेला मृण कला पिछले कुछ सालों से निसंदेह व्यापक प्रसार हुआ जो हर सार्वजनिक स्थल पर देखने को मिल रही है इसी तरह जनजाति कला के भी प्रसार की आवश्यकता है। जनजाति कला का मूल आधार केंद्र इनके धार्मिक आस्था होना है जिसके परिणाम मे ही कलाओं का जन्म होता है। इनके धार्मिक आस्था को ध्यान मे रखकर नवाचार करने चाहिए।

चित्र संख्या-5

चित्र संख्या-6

सरकारी संस्थाएँ कुछ प्रयास अच्छा कर रही है जैसे उदयपुर मे जनजाति क्षेत्रिय विकास विभाग, उदयपुर एवं दृश्यकला विभाग मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर के सयुक्त तत्वाधान में पाँच दिवसीय "लोकलोर" अंतर्राष्ट्रीय कला कार्यशाला आयोजित हुई। प्रोफेसर मदनसिंह राठौड़ के निर्देशन यह कार्यशाला 10 से 14 मार्च 2019 तक सम्पन्न हुई। (चित्र संख्या-1,2) जिसमें देश-विदेश के नामचीन आदिवासी एवं आधुनिक कलाकार आमंत्रित किए गए। कार्यशाला का मुख्य उधेश्य भारतीय समृद्धशाली आदिम कलाओं के संरक्षण एवं समकालीन दौर मे

इसकी प्रासंगिकता से आमजन को परिचय करना हैं। इन कलाओं के संरक्षण की महत्ती आवश्यकता हैं। वैश्विकरण के दौर मे इनके मूल स्वरूप नष्ट होने की कगार पर हैं। इस समय आधुनिकता की दौड़ मे इन आदिम परम्पराओं का सुचारु निर्वहन नहीं हो पाने एवं मूल पहचान पीछे छुटती जा रही हैं एवं समकालीन विषयों मे संयोजन से आज स्थिति यह की इनके मूल स्वरूप को पहचानना तक मुश्किल होता जा रहा हैं।

चित्र संख्या-7

कार्यशाला मे भारतीय आदिम कला की प्रतिनिधि कला विधाओं के कलाकारों को सम्मिलित किया है जेसे मध्यप्रदेश गोंड पेंटिंग से मयंक श्याम यह भारतीय आदिवासी कला प्रसिद्ध कलाकार स्वर्गीय जनगड सिंह श्याम के पुत्र है। यह अपने पिता की तरह ही आदिवासी गोंड पेंटिग करते है ओर अब तो गोंड पेंटिग मे जनगड़ शैली बन चुकी है। मध्यप्रदेश के किसी भी गोंड पेंटर से जानकारी लेंगे तो वह जनगड सिंह को अपना रिस्तेदार बताएगा। क्यूंकी श्याम शैली दुनियाभर मे चीरपरिचित है। आज जनगड़ सिंह भले ही इस दुनिया मे नहीं है लेकिन उनके किए कला कार्य की शैली से कई परिवार जीवन यापन कर रहे है।(चित्र संख्या-4)

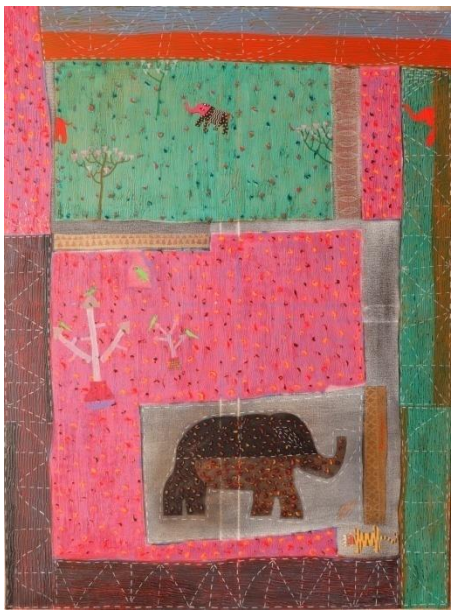

चित्र संख्या-8

बिहार की सुप्रसिद्ध मधुबनी पेंटिंग के ख्यात कलाकार श्रवण कुमार जो बिहार मे कई सरकारी एवं निजी दफ्तरो मे अपनी कला के भव्य चित्रण कर चुके है। इन्होने रामायण, महाभारत जेसे कई भारतीय ग्रंथो का चित्रण किया है।(चित्र संख्या-5)

चित्र संख्या-9

लोकलोर शिविर मे श्रवण ने राधा-ष्ण को मधुबनी मे देशज लाल, नारंगी, हरे, पीले नीले, काले रंगो से सुंदर चित्रण किया। महाराष्ट्र वर्ली पेंटिंग से मयूर वयडा जिसने वर्ली को समकालीन कला परिदृश्य मे अभिव्यक्त किया लेकिन वर्ली कला की मूल आत्मा को जिंदा रखा यह खास बात मयूर की कृति मे देखने को मिली। वेसे भी भारतीय कला मे जितना वर्ली पेंटिग आमजन के बीच जगह बनाई है उतनी कोई ओर कला ने प्रशिद्धि नहीं पाई है। वर्ली की साधारण कला रूपो को बहुत आसानी से समझा जाता है। इसकी कला रूप को दुनिया का सबसे सरल रूप का दर्जा दिया गया है। (चित्र संख्या-6)

अन्य कलाकार आंद्रप्रदेश से लेदर पपेट पेंटिंग से एस चिदम्बरम राव जो बकरे का चमड़े पर चित्रण करते है, इन्होने यहाँ लोकलोर कार्यशाला मे सभी दर्शको का बहुत आकर्षण का केंद्र रहे क्यूंकी यह अपने आप मे एक अलग ओर यहाँ राजस्थान के कलाकारो की पहुँच से दूर थी। इसलिए खासकर कला विध्यार्थियों के लिए कई सवाल-जवाब के रोचक विषय रहे। (चित्र संख्या-3)

चित्र संख्या-10

चिदम्बरम ने कार्यशाला मे रामायण विषय का दृश्य बनाया, गुजरात से पिथौरा पेंटिंग से देसिंग यह पूर्णत आशिक्षित कलाकार था जिसको आधुनिक कला दुनिया से कोई सरोकार नहीं है अपने कलाकार्य करने मे मस्त है। हिन्दी बोलना भी नहीं जनता आपसी सम्प्रेषण की भी बड़ी समस्या है, तो बोलने से डरता है लेकिन तमाम चुनोतियों के बावजूद यह इस कार्यशाला से आधुनिक कलाकारों के संग रहकर बहुत कुछ कला की बाते सीखकर गया।, राजस्थान सवाईमाधोपुर से मीणा पेंटिंग मे ओम प्रकाश मीणा है। (चित्र-10)

मीणा पेंटिंग मे सबसे समृद्ध अवस्था मे कोई पेंटिग हे तो वह मीणा कला रूप है जो राजस्थान के पूर्वी भाग मे प्रचलित है।

चित्र संख्या-11

यह अपने घरों की दीवारों पर बड़े रूप मे कलाकृतियां उकेरते है।, मेवाड़ भील पेंटिंग मे फुला पारगी जो मेवाड़ की प्रशिद्ध शादी मे बनने वाली गोतरेज का चित्रण किया जो बड़ा सहज अभिव्यक्ति का परिचायक है(चित्र-2), शिव कुमार जो कर्नाटक की पारंपरिक वृत आकार मे कलाकृति का सृजन किया (चित्र-9), किशोर कुमार यह नेपाल से आए इन्होने पारंपरिक टंका कला की बुद्ध प्रतिमा से अपनी अभिव्यक्ति का आकार दिया जो बहुत आकर्षण का केंद्र रही।(चित्र-11)

साथ ही इस कार्यशाला की खास बात है कि आदिम प्रतिनिधि कलाकारों के साथ अकादमिक संस्थाओं से दीक्षित आधुनिक कलाकारों को सम्मिलित किया है जिससे दीक्षित एवं परम्परावादी कलाकारों के मध्य कलात्मक विचारों का आदान प्रदान होगा। मुख्य लाभ परम्परावादी आदिवासी कलाकारों का यह हुआ कि दीक्षित कलाकारों से कला जगत की वेश्विक कला बाजार की मूलभूत जानकारी प्राप्त हुई।

वही दीक्षित अकादमिक कलाकार परम्परावादी आदिम कला रूपों से परिचित होकर समकालीन दौर मे इसके प्रयोग अपने सृजन में कर वैश्विक स्तर पर कला मे नवाचार को शामिल कर भारतीय समकालीन कला को समृद्ध करेंगे। चूँकि आमतौर पर देखा गया है कि हम पश्चिमी सभ्यता से मोहित होकर उनके कलात्मक परीवेश का अनुसरण करते आए है, इस पूर्वाग्रह को अथवा मिथ को तोडने का

चित्र संख्या-12

उधेश्य रहेगा और इसके इस कार्यशाला माध्यम से स्वदेशी संस्कृति के कलात्मक तत्वो से समकालीन कला मे प्रयोगकर देशज कला के अंतर्राष्ट्रीय रूप को सबके सम्मुख लायेंगे।

अकादमिक दीक्षित कलाकारों की सूची में दिल्ली से डॉ. लक्षमन प्रसाद इन्होने डोगरा शिल्प की कामधेनु से प्रभावित होकर अपनी कृति मे लोक रूपकारों के साथ संयोजन किया(चित्र-18), सुनील कुमार बनारस ने पुरानी धरोहर को चित्रो मे पिरोने का सुंदर संयोजन किया, किरण मुर्डिया उदयपुर की प्राचीन धरोहर से प्रेरित होकर सृजन कार्य किया(चित्र-15), युगल किशोर शर्मा ने नाथद्वारा लघुचित्र परंपरा मे कामधेनु विषय का सुंदर चित्रण किया(चित्र-16), भूपत डूडी ने लोक मे प्रचलित कपड़ो के ऊपर प्रिंट के छोटे-छोटे टुकड़ो को केनवास पर चिपकाकर समकालीन एवं परम्परा के फ्यूजन का सुंदर संयोजन किया।(चित्र-12)

चित्र संख्या-13

रामसिंह भाटी समकालीन लोक नारी और उसका मोबाइल क्रांति का संयोजन देखने को मिला(चित्र-17), संदीप कुमार मेघवाल ने मेवाड़ की प्रसिद्ध भील गंवरी नाट्य के मुख्य पात्रो का पीले, श्याम रंग से चित्रण किया जिसमे मुखोटे धारण किए हुए तीन हास्य कलाकार है(चित्र-20)। राम डोंगरे लोक जीवन मे प्रचलित आसन गुदड़ी का चित्रण किया जो बहुत आकर्षण का केंद्र रहा क्यूंकी यह हूबहू वास्तविकता के बहुत करीब चित्रण किया जिससे दर्शक इसको छु कर देखकर पता करते कि यह रंग से बना चित्र है। वंदना कुमारी ने मधुबनी पेंटिंग को अपनी निजी शैलीगत विशेषता के साथ प्रस्तुत किया(चित्र-14), अरिने(जर्मनी) से इन्होने पूर्णत अमूर्त चित्रण कर सुंदर संयोजन रूप दिया तो(चित्र-21), चिमन डांगी जोधपुर की ब्लू सिटी को अमूत विधा से रूपांकित किया(चित्र-19), सुरेन्द्र सिंह चुंडावत शिव की नंदी के साथ सुंदर तीव्र रंगो के साथ संयोजन किया(चित्र-13) इत्यादी।

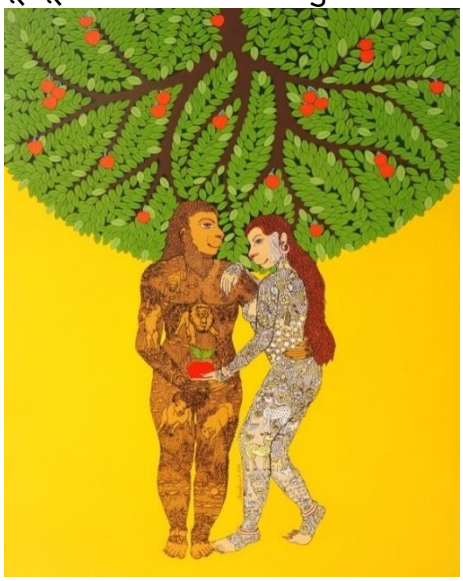

चित्र संख्या-14

निष्कर्श रूप से यह कहा जा सकता है यह कला कार्यशाला जिसमे आदिवासी एवं समकालीन कलाकारों का संयोजित कार्यशाला बहुत सफल रही। दोनों ही कलाकारों को आपसी संवाद से बहुत लाभप्रद रहा एवं कई स्मृतियाँ छोड़ गए जो आने वाले समय के लिए बहुत महत्वपूर्ण निधि है। आमतौर पर एक ही विधा के आयोजन ज्यादा होते है जेसे समकालीन कलाकारों के शिविर जिसमें आदिवासी कलाकारों को सम्मिलित नहीं किया जाता तो इन मूल भारतीय आदिवासी कला के साथ गलत

दृष्टिकोण अपनाया जाता है। आज के दौर मे आदिवासी कला संरक्षण के लिए इस प्रकार के आयोजन की बहुत आवश्यकता है।

संदर्भ-

1. सम्पूर्ण छायाचित्र लेखक द्वारा खींचे है एवं कला कार्यशाला में स्वयं भागीदार कलाकार के रूप मे रहकर विभिन प्रतिभागी कलाकारों का साक्षात्कार कर लेख का रूप दिया हैं।